# न्यूज़ टुडे

## जलवायु परिवर्तन से पृथ्वी के ध्रुव 27 मीटर तक खिसक सकते हैं

एक नए अध्ययन में पाया गया है कि **जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवीय बर्फ काफी तेजी से पिघल रहे हैं**। इसके कारण पृथ्वी के **भौगोलिक ध्रुवों (Geographical Poles) की स्थिति में बदलाव आ सकता** है।

- भौगोलिक ध्रुव **पृथ्वी के घूर्णन अक्ष के दोनों सिरों पर स्थित** हैं। पृथ्वी का घूर्णन अक्ष एक **काल्पनिक रेखा** है, जिसके चारों ओर पृथ्वी घूमती है। यह काल्पनिक रेखा पृथ्वी की सतह से **दो स्थानों पर मिलती है**। इन बिंदुओं को **भौगोलिक ध्रुव या उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव** के नाम से जाना जाता है।
  - **भूपर्पटी** के संबंध में **पृथ्वी के घूर्णन ध्रुव** की गति को **ध्रुवीय गति (Polar motion)** कहा जाता है।

**ध्रुव क्यों खिसक रहे हैं?**

- पृथ्वी का घूर्णन पूरी तरह से **स्थिर नहीं** है। पृथ्वी पर मौजूद **द्रव्यमान के वितरण में परिवर्तन** के कारण इसमें **उतार-चढ़ाव** होता है।
- **पृथ्वी के घूर्णन में उतार-चढ़ाव निम्नलिखित कारणों से हो सकता है:**
  - **वायुमंडलीय दबाव** या **समुद्री धाराओं में उतार-चढ़ाव,**
  - **कोर-मेंटल** डायनेमिक,
  - **ग्लेशियल कैप यानी बर्फ की टोपियों और ग्लेशियरों का पिघलना,**
    - एक अध्ययन के अनुसार, बर्फ पिघलने और महासागरीय द्रव्यमान में परिवर्तन के कारण वर्ष 2100 तक उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव **12 से 27 मीटर तक खिसक सकते** हैं।
    - इसका प्रमुख कारण **ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका में बर्फ का पिघलना** है। इनके साथ-साथ **छोटे ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना भी एक प्रमुख कारण** है।

**ध्रुवों के खिसकने के संभावित प्रभाव**

- **नेविगेशन में जटिलता:** ध्रुवों के खिसकने से **उपग्रह आधारित नेविगेशन और अंतरिक्ष दूरबीन** प्रभावित हो सकते हैं, क्योंकि ये सटीक स्थिति के लिए पृथ्वी के घूर्णन पर निर्भर होते हैं।
- **दिन की अवधि में वृद्धि:** बर्फ के पिघलने के कारण पृथ्वी के ध्रुवों से द्रव्यमान भूमध्य रेखा की ओर स्थानांतरित हो रहा है। इसके कारण पृथ्वी थोड़ी **चपटी** हो जाती है।
  - द्रव्यमान के इस पुनर्वितरण से **पृथ्वी के घूर्णन की गति धीमी** हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप **दिनों की लंबाई बढ़ जाती है**।
    - वर्ष 2000 के बाद से, दिनों की अवधि में वृद्धि की दर तेज हो गई है। वर्तमान में, **हर 100 वर्षों में दिन लगभग 1.33 मिलीसेकंड लंबे हो रहे हैं,** जो पिछली शताब्दी की तुलना में अधिक तीव्र गति है।

## भारत का पहला फास्ट-ब्रीडर परमाणु रिएक्टर (500 MWe) 2026 तक चालू हो जाएगा

**तमिलनाडु** के **कलपक्कम** में स्थित यह संयंत्र **भारत के तीन चरणों वाले परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के दूसरे चरण** का आरंभ करेगा।

**फास्ट ब्रीडर रिएक्टर के बारे में**

- **उत्पत्ति:** 2003 में, सरकार ने **प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR)** के निर्माण और संचालन के लिए **भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड (BHAVINI)** की स्थापना की थी।
  - इससे पहले **प्रथम चरण का कार्यान्वयन भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड (NPCIL)** द्वारा किया गया था।
- **फास्ट-ब्रीडर परमाणु रिएक्टर की कार्यप्रणाली:**
  - इसमें **ईंधन** के तौर पर देश में उत्पादित **यूरेनियम-प्लूटोनियम मिश्रित ऑक्साइड (MOX)** का और **कूलेंट के रूप में तरल सोडियम** का उपयोग किया जाता है।
  - इसमें ईंधन कोर के चारों ओर मौजूद **यूरेनियम-238 का 'आवरण' न्यूक्लियर ट्रांसम्यूटेशन** की प्रक्रिया से गुजरता है जिससे और **अधिक ईंधन का उत्पादन होगा**। इसलिए इसे **"ब्रीडर"** कहा जाता है।

**फास्ट-ब्रीडर रिएक्टर (FBR) का महत्व**

- **तीसरे चरण का मार्ग प्रशस्त:** यह रिएक्टर **थोरियम-232** जैसे **गैर-विखंडनीय पदार्थ** को **विखंडनीय यूरेनियम-233** में बदलकर **तीसरे चरण के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव** रखता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, भविष्य में तीसरे चरण के लिए आवश्यक **यूरेनियम-233 ईंधन** तैयार किया जाता है।
- **तकनीकी उन्नति: रूस** के बाद **भारत** वाणिज्यिक तौर पर FBR का संचालन करने वाला दूसरा देश बन जाएगा।
- **परमाणु अपशिष्ट में कमी:** इसमें **चरण-I के तहत उपयोग किए जा चुके ईंधन** का उपयोग किया जाता है।
- **थोरियम भंडार का उपयोग:** भारत में थोरियम का विशाल भंडार मौजूद है। इसकी शुरुआत से ईंधन के आयात में कमी आएगी।

**भारत का तीन चरणों वाला परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम**

- **डॉ. होमी जे. भाभा को भारत के परमाणु कार्यक्रम का जनक** माना जाता है। उन्होंने 1950 के दशक में **तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम** तैयार किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के सीमित यूरेनियम संसाधनों और प्रचुर थोरियम भंडार का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करना था।

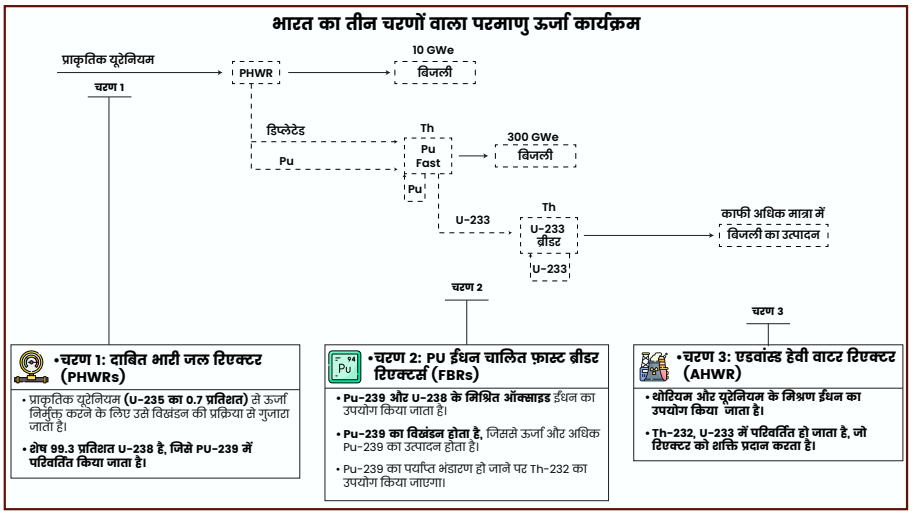

## गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में दो दक्षिण अफ्रीकी चीते छोड़े गए

**मध्य प्रदेश के मंदसौर** जिले में स्थित गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में कुनो राष्ट्रीय उद्यान से दो चीते स्थानांतरित किए गए हैं।

- इन चीतों को मूल रूप से **प्रोजेक्ट चीता के तहत फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से कुनो राष्ट्रीय उद्यान (मध्य प्रदेश)** लाया गया था।

**प्रोजेक्ट चीता के बारे में**

- यह 2022 में शुरू की गई एक ऐतिहासिक **वन्यजीव संरक्षण** पहल है।
- **उद्देश्य:** 1940 के दशक के अंत और 1950 के दशक की शुरुआत में **विलुप्त हो चुके चीतों को भारत में फिर से बसाना।**
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)।
- **तकनीकी सहायता:** भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) द्वारा प्रदान की गई है।
- **प्रोजेक्ट चीता संचालन समिति:** इसका गठन 2023 में NTCA ने किया था। इसका कार्य **प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन की निगरानी व मूल्यांकन** करना और **परामर्श** देना है।
  - NTCA पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन एक **वैधानिक** निकाय है। इसका गठन 2006 में **संशोधित वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972** के प्रावधानों के तहत किया गया है।
- **मुख्य उद्देश्य:**
  - **सुरक्षित पर्यावासों में चीतों की प्रजननशील आबादी बसाना,** खासतौर पर उन क्षेत्रों में जहां ये ऐतिहासिक रूप से पाए जाते थे।
  - खुले वन और सवाना घास भूमियों को पुनर्बहाल करने हेतु **चीते को एक फ्लैगशिप और अम्ब्रेला प्रजाति के रूप में उपयोग** करना।
  - प्रोजेक्ट चीता का **इको-डेवलपमेंट** और **इको-टूरिज्म** के लिए उपयोग करना, ताकि **स्थानीय समुदायों की आजीविका** को बढ़ाया जा सके।

**चीते के बारे में**

- चीता दुनिया का सबसे तेज **दौड़ने वाला स्तनधारी** है। यह **भारत में विलुप्त होने वाला एकमात्र बड़ा मांसाहारी जीव** है। चीता 1952 में भारत से विलुप्त हो गया था।
- यह CITES के **परिशिष्ट-1** में सूचीबद्ध है।
- अन्य बड़ी बिल्ली प्रजातियों जैसे- शेर, बाघ, तेंदुए, प्यूमा और जगुआर के विपरीत चीते दहाड़ते नहीं हैं।
- **भौगोलिक वितरण:**
  - **एशिया:** वर्तमान में केवल **ईरान के पूर्वी शुष्क क्षेत्रों** में पाए जाते हैं। भारत में अब **पुनः बसाए गए चीतों** की उपस्थिति है।
  - **अफ्रीका:** संपूर्ण अफ्रीकी महाद्वीप में **घास के मैदानों, झाड़ियों और खुले वनों** में पाए जाते हैं। विशेषकर **बोत्सवाना, नामीबिया तथा दक्षिण अफ्रीका** में इनकी आबादी अधिक है।
- **वर्तमान में चीतों की दो प्रजातियां मौजूद हैं:**
  - **अफ्रीकी चीता** (IUCN स्थिति- वल्नरेबल); तथा
  - **एशियाई चीता** (IUCN स्थिति- क्रिटिकली एंडेंजर्ड)।

## RBI-गवर्नर ने वैश्विक बाजारों में व्यापक परिवर्तन को देखते हुए भारत के वित्तीय बाजारों की कार्यप्रणाली से जुड़ी चिंताओं को रेखांकित किया

**वित्तीय बाजार यानी कैपिटल मार्केट पूंजी जुटाने तथा बॉण्ड्स, स्टॉक्स, विदेशी मुद्रा तथा डेरिवेटिव** जैसे वित्तीय परिसंपत्तियों की खरीद-बिक्री के प्लेटफॉर्म्स होते हैं।

**भारत के वित्तीय बाजार की समस्याएं**

- **सरकारी प्रतिभूति (G-Secs) बाजार:**
  - **विविधता की कमी:** केवल कुछ प्रतिभूतियों की ही अधिक खरीद-बिक्री होती है। इसकी वजह से **लंबी अवधि की प्रतिभूतियों में कारोबार** कम होता है।
  - **सेकेंडरी मार्केट में कम भागीदारी:** सेकेंडरी मार्केट में कारोबार **मुख्यतः बैंकों और प्राथमिक डीलर्स** द्वारा किया जाता है। इससे टर्नओवर अनुपात कम है।
    - टर्नओवर अनुपात का अर्थ है **एक वर्ष में किसी बॉण्ड की कुल खरीद-बिक्री और निवेशकों के पास रखे बॉण्ड का अनुपात।**
- **मनी मार्केट (मुद्रा बाजार):**
  - **कॉल मनी मार्केट:** काल मनी मार्केट में तरलता यानी कारोबार की संख्या घटती जा रही है।
    - 'कॉल मनी' में **धन का लेन-देन या निवेश एक दिवसीय आधार** पर किया जाता है।
  - **टर्म मनी मार्केट:** ओवरनाइट मार्केट यानी अल्पकालिक ऋण या निवेश पर अत्यधिक निर्भरता देखी जाती है। साथ ही, जोखिम-मुक्त टर्म लोन का अधिक विकास नहीं हो पाया है, जबकि यह ब्याज दर उत्पादों के मानक मूल्य निर्धारण के लिए जरूरी है।
    - **'टर्म मनी' से आशय 14 दिनों से अधिक की अवधि के लिए फंड उधार लेना या देना** है।
  - **अलग-अलग मनी मार्केट दरों में अंतर:** जैसे कि कॉल मनी रेट, मार्केट रेपो रेट और ट्राई पार्टी रेपो डीलिंग सिस्टम (TREPS) रेट में अंतर देखा जाता है।
    - ट्राई-पार्टी रेपो वास्तव में एक **पुनर्खरीद समझौता** है। इसमें थर्ड पार्टी **ऋणी और ऋणदाता के बीच मध्यवर्ती की भूमिका** निभाती है। थर्ड पार्टी **कोलेटरल, भुगतान और निपटान जैसी प्रक्रियाएं** देखती है।
- **विदेशी मुद्रा (FX) बाजार:** लघु और बड़े ग्राहकों के लिए प्राइसिंग में अंतर देखा जाता है। साथ ही, पारदर्शिता सुनिश्चित करने वाले नियमों एवं निर्देशों का अक्सर उल्लंघन किया जाता है।
- **डेरिवेटिव बाजार:**
  - कारोबार के मामले में इनका आकार अभी छोटा है;
  - GDP में इनकी हिस्सेदारी भी कम है;
  - डेरिवेटिव उत्पादों की संख्या कम है, खरीद-बिक्री के लिए उत्पाद कम हैं यानी तरलता की कमी है आदि।

**आगे की राह**

- डेरिवेटिव बाजारों में **सिक्योर्ड ओवरनाइट रूपी रेट (SORR)** का विकास किया जाना चाहिए।
- सरकारी प्रतिभूति (G-Sec) बाजार में **रिटेल निवेशकों की भागीदारी बढ़ानी** चाहिए। इस दिशा में **'RBI रिटेल डायरेक्ट' सुविधा** एक सही प्रयास है।
- **RBI द्वारा तरलता बढ़ाने के उपायों का लाभ अधिक लोगों तक पहुंचाने में** बैंकों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

## यूनेस्को ने 16 नए ग्लोबल जियोपार्क को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

**यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क (UGGP) की 10वीं वर्षगांठ** के अवसर पर यूनेस्को ने 11 देशों के 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया है।

- **ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क** यूनेस्को के तहत स्थापित एक **गैर-लाभकारी अंतर्राष्ट्रीय संघ** है।
- यह उन नैतिक मानकों की स्थापना करता है जिन्हें ग्लोबल जियोपार्क्स द्वारा अपनाया जाना चाहिए।

### GGN में शामिल किए गए प्रमुख जियोपार्क्स

- **कंबुला (चीन):** यह **किंघई-तिब्बत पठार** के किनारे स्थित है। इसमें बेहतर तरीके से संरक्षित **प्राचीन मैक्सिउ ज्वालामुखी** और **पीली नदी** शामिल है।
- **माउंट पैक्टू (उत्तर कोरिया):** यह उस जगह स्थित है जहां लगभग 1000 ई. में मिलेनियम विस्फोट हुआ था। मिलेनियम विस्फोट अब तक रिकॉर्ड किए गए **इतिहास में सबसे बड़े विस्फोटों में से एक** है।
- **उत्तरी रियाद (सऊदी अरब):** तुवैक पर्वत के आधार पर स्थित ओबैथरान घाटी (वादी ओबैथरान) एक हरा-भरा भंडार है, जो स्थानीय जल संसाधनों के लिए महत्वपूर्ण।
  - इस घाटी में **प्राचीन प्रवाल भित्तियों के पारिस्थितिक तंत्र** भी मौजूद हैं।

### यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क (UGGP) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसकी शुरुआत 2015 में **इंटरनेशनल जियोसाइंसेज़ एंड जियोपार्क्स प्रोग्राम (IGGP)** के एक प्रमुख घटक के रूप में की गई थी।
- **जियोपार्क्स:** UGGPs ऐसे **एकल व एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र** होते हैं, जहां **अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक महत्त्व के परिदृश्यों** को निम्नलिखित की समग्र अवधारणा के साथ प्रबंधित किया जाता है:
  - **संरक्षण,**
  - **शिक्षा,** और
  - **सतत विकास**
- **प्रबंधन:** इनका प्रबंधन **राष्ट्रीय कानून के तहत मान्यता प्राप्त किसी विधिक निकाय** द्वारा किया जाता है।
- **पुनर्मूल्यांकन अवधि:** UGGP का दर्जा स्थायी नहीं होता, बल्कि **प्रत्येक चार साल** में इसका पुनर्मूल्यांकन किया जाता है।
- **अनिवार्य नेटवर्किंग:** UGGPs के लिए GGN की सदस्यता अनिवार्य है।
- **वर्तमान स्थिति:** वर्तमान में **50 देशों में 229 यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क्स** हैं। भारत में **एक भी यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नहीं** है।

## नीति आयोग के एक सदस्य ने खाद्य-तेलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए जीएम फसलों को अपनाने का समर्थन किया

### जीएम फसल क्या है?

- जीएम फसलें **आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें** होती हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो जीएम फसलें ऐसे पादप होते हैं, जिनके डीएनए को वांछित गुण का समावेशन करने के लिए जेनेटिक इंजीनियरिंग तकनीकों का उपयोग करके बदला गया होता है।
  - **उदाहरण के लिए-** फसलों को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उत्पादक बनाए रखने तथा कीट प्रतिरोधी बनाने के लिए उपर्युक्त तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है।
- **ट्रांसजेनिक्स,** आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों की एक पद्धति है। इसके तहत **किसी फसल में किसी अन्य प्रजाति का एक या अधिक डीएनए अनुक्रम कृत्रिम रूप से प्रवेश** कराया जाता है।
  - उदाहरण के लिए- **बीटी कपास** में एक बैक्टीरिया से प्राप्त जीन को प्रवेश कराया गया है।
- **भारत में जीएम फसलों की अनुमति**
  - भारत में, **बीटी कपास एकमात्र जीएम फसल है जिसकी खेती की मंजूरी** दी गई है।
  - वर्ष 2022 में केंद्र सरकार ने **शाकनाशी-सहिष्णु जीएम सरसों 'DMH-11'** को कुछ शर्तों के साथ परीक्षण की अनुमति दी थी।
    - हालांकि, इस मंजूरी को **वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट में चुनौती** दी गई है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक आदेश में जीएम फसलों पर एक **राष्ट्रीय नीति तैयार करने का सुझाव** दिया है।
- **खाद्य तेलों के उत्पादन के लिए जीएम फसलों को अपनाने की आवश्यकता क्यों है?**
  - **बढ़ती खपत, कम उत्पादन:** भारत में प्रति व्यक्ति खाद्य तेल की खपत **19.7 किलोग्राम प्रतिवर्ष** तक पहुंच गई है। इस **मांग की पूर्ति घरेलू उत्पादन से नहीं** हो पा रही है।
    - बढ़ती जनसंख्या तथा शहरों में बढ़ती आबादी से भविष्य में खाद्य तेलों की मांग और बढ़ेगी।
  - **आयात पर अधिक निर्भरता:** भारत में **खाद्य तेल की कुल मांग का 55–60% आयात से पूरा** होता है। खाद्य तेल के लिए आयात पर अधिक निर्भरता से **खाद्य सुरक्षा एवं आर्थिक स्थिरता खतरे** में पड़ सकती है।
  - **अल्पकालिक आत्मनिर्भरता:** भारत ने 1990 के दशक की शुरुआत में **पीली क्रांति** (Yellow Revolution) के दौरान **तिलहन में आत्मनिर्भरता** प्राप्त की थी। हालांकि, यह स्थिति अधिक समय तक नहीं बनी रही।

### उपाय

- **राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन–तिलहन (NMEO-Oilseeds)** की कार्यनीतियों में **जीनोम एडिटिंग को अपनाने** का उल्लेख किया गया है। इस मिशन का उद्देश्य **2030-31 तक देश में 25.45 मिलियन टन खाद्य तेल उत्पादन के लक्ष्य** को प्राप्त करना है।

## अन्य सुर्ख़ियां

### ब्रह्मोस मिसाइल

भारत ने **ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली की दूसरी खेप फिलीपींस** को सौंपी।

**ब्रह्मोस मिसाइल के बारे में**

- यह **भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित** की गई मिसाइल है।
- यह **लंबी दूरी की सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल** है। इसे **भूमि, समुद्र और वायु से लॉन्च** किया जा सकता है।
- **दो स्टेज वाली प्रणाली:**
  - **मिसाइल का पहला स्टेज (ठोस ईंधन बूस्टर):** यह स्टेज शुरुआती सुपरसोनिक गति प्रदान करता है।
  - **दूसरा स्टेज (लिक्विड रैमजेट):** यह क्रूज़ चरण में **मिसाइल को लगभग 3 मैक गति** तक ले जाता है।
- **रेंज: 290 किलोमीटर** तक मार कर सकती है।
- **विशेष क्षमताएं:**
  - **"फायर एंड फॉरगेट"** तकनीक से युक्त;
  - उड़ान भरने में कम समय लगने के कारण लक्ष्य को तेजी से और कम समय में निशाना बनाने में सक्षम,
  - अत्यंत सटीक हमला (पिन-पॉइंट एक्यूरेसी)।

### एवोल्युशन्स (EVolutionS) कार्यक्रम

सरकार ने प्रोजेक्ट EVolutionS के तहत **इलेक्ट्रिक वाहन स्टार्ट-अप्स को अनुदान प्रदान** किया।

**EVolutionS कार्यक्रम के बारे में**

- EVolutionS से आशय है- **'स्टार्ट-अप्स के नेतृत्व वाले इलेक्ट्रिक-वाहन समाधान'** (Electric Vehicle Solutions led by Startups) कार्यक्रम।
  - यह कार्यक्रम **केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय** के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) ने शुरू किया है।
- इसका कार्यान्वयन **केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय (MHI) और भारतीय ऑटोमोटिव कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन (ACMA)** के सहयोग से किया जा रहा है।
- **उद्देश्य:** चुनिंदा स्टार्ट-अप्स को प्रायोगिक डेमोंस्ट्रेशन, परीक्षण, घटकों के सत्यापन और उद्योग जगत से जोड़ने में सहायता प्रदान करना, ताकि इलेक्ट्रिक वाहन उत्पादों को तेजी से बाजार में उपलब्ध कराया जा सके।
- यह कार्यक्रम **इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया और चार-पहिया वाहनों (जैसे L5 श्रेणी, ई-रिक्शा और ई-कार्ट); ई-बसों एवं पब्लिक EV चार्जिंग अवसंरचना** के लिए आवश्यक घटकों को कवर करता है।
- जिन स्टार्ट-अप्स ने **स्वदेशी सामग्रियों या घटकों के विकास में क्षमता** प्रदर्शित की है, उन्हें **50 लाख रुपये की अनुदान सहायता** मिलेगी। इसमें **30 लाख रुपये इक्विटी-आधारित योगदान** के रूप में होंगे।

## आर्यभट्ट सैटेलाइट

भारत के पहले सैटेलाइट 'आर्यभट्ट' ने प्रक्षेपण के 50 वर्ष पूरे किए।

**आर्यभट्ट सैटेलाइट के बारे में**

- इस सैटेलाइट का निर्माण इसरो (ISRO) ने एक्स-रे एस्ट्रोनॉमी, वायुमंडलीय विज्ञान (एरोनॉमिक्स), और सोलर-फिजिक्स में प्रयोग करने के लिए किया था।
- इस सैटेलाइट का नाम प्राचीन भारतीय गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया है।
- इसे 1975 में सोवियत संघ के कोस्मोस-3M रॉकेट से वोल्गोग्राड प्रक्षेपण केंद्र (वर्तमान रूस) से प्रक्षेपित किया गया था।
- इसने भारत को अंतरिक्ष की कक्षा में सैटेलाइट भेजने वाला विश्व का 11वां देश बना दिया था।

## भारत में ट्रेडमार्क प्राप्त भवन

हैदराबाद (तेलंगाना) में उस्मानिया विश्वविद्यालय (OU) का आर्ट्स कॉलेज भवन, अपने बाहरी डिजाइन के लिए ट्रेडमार्क प्राप्त करने वाला भारत का तीसरा भवन बन गया है।

- इसके पहले दो भवन ताज महल पैलेस होटल और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज है।

**ट्रेडमार्किंग के लाभ**

- यह उस्मानिया विश्वविद्यालय को वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए भवन की छवि का इस्तेमाल करने और इसके डिजाइन की अनधिकृत नकल को रोकने के संबंध में अनन्य अधिकार देता है।
- यह ट्रेडमार्क भवन की अनोखी स्थापत्य पहचान को संरक्षित करने में मदद करता है।

**भवन की स्थापत्य कला का महत्त्व**

- दिसंबर 1939 में निर्मित, यह भवन उस्मान शाही स्थापत्य कला शैली का प्रतीक है।
  - यह शैली कुतुब शाही और मुगल स्थापत्य कला का मिश्रण है। इस पर काकतीय मंदिरों, अजंता और एलोरा की गुफाओं का प्रभाव भी दिखाई देता है।
- यह भवन निज़ाम-युग की अन्य इमारतों से अलग है, क्योंकि इसमें गुंबद नहीं है, जो उस दौर की इमारतों में आमतौर पर होता था।

## स्कारबोरो शोल (Scarborough Shoal)

चीन ने दक्षिण चीन सागर (South China Sea) के विवादास्पद स्कारबोरो शोल जलक्षेत्र में फिलीपींस पर घुसपैठ करने का आरोप लगाया है।

- दक्षिण चीन सागर पश्चिमी प्रशांत महासागर का एक सीमांत सागर है। इसकी सीमाएं ब्रुनेई दारुस्सलाम, मलेशिया, इंडोनेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम और चीन से लगती हैं।

**स्कारबोरो शोल के बारे में**

- स्कारबोरो दक्षिण चीन सागर का सबसे बड़ा एटोल (प्रवाल द्वीप) है। यह फिलीपींस के पश्चिम में लगभग 220 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
- यह फिलीपींस के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में स्थित है। हालांकि, चीन का कहना है कि यह 13वीं सदी से ही उसके अधिकार क्षेत्र में रहा है। इसके लिए उसने एक काल्पनिक नाइन-डैश लाइन तैयार की है और इसके भीतर के सभी क्षेत्रों पर अपना दावा करता है।
- दक्षिण चीन सागर में अन्य विवादित द्वीप हैं: पारासेल द्वीपसमूह और स्प्रैटली द्वीपसमूह।

## कॉम्प्रिहेंसिव रिमोट सेंसिंग ऑब्ज़र्वेशन ऑन क्रॉप प्रोग्रेस (CROP)

इसरो के सैटेलाइट CROP ने भारत में गेहूं की फसल के रकबा क्षेत्र और उत्पादन का आकलन किया।

- CROP प्रणाली के अनुसार, भारत के 8 प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में कुल गेहूं उत्पादन 122.724 मिलियन टन अनुमानित है (31 मार्च, 2025 की स्थिति)।

**CROP के बारे में**

- यह एक अर्ध-स्वचालित और स्केलेबल फ्रेमवर्क है। इसे इसरो के नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर (NRSC) द्वारा विकसित किया गया है।
- यह देश में रबी सीजन के दौरान फसलों की बुवाई और कटाई की लगभग रियल टाइम आधार पर निगरानी की सुविधा प्रदान करता है।
- इसने 2024-25 के रबी सीजन के लिए EOS-04 (RISAT-1A), EOS-06 (ओशनसैट-3) और रिसोर्ससैट-2A सैटेलाइट्स से प्राप्त ऑप्टिकल एवं सिंथेटिक एपर्चर रडार (SAR) रिमोट सेंसिंग डेटा का उपयोग किया है।

## कोकबोरोक

कोकबोरोक साहित्य परिषद ने कोकबोरोक भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की।

**कोकबोरोक भाषा के बारे में:**

- "कोकबोरोक" शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों से हुई है। इसमें "कोक" का अर्थ है "मौखिक" और "बोरोक" का अर्थ है "लोग" या "मानव"।
- यह बोरोक समुदाय की भाषा है, जिसे भौगोलिक रूप से त्रिपुरी के रूप में जाना जाता है।
- यह देबबर्मा (त्रिपुरी) रियांग, जमातिया, नोआतिया, कलाई, रूपिनी, मुरासिंग, उचोई आदि समुदायों की मातृभाषा है।
- इसे त्रिपुरा की राजकीय भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- यह चीनी-तिब्बती भाषा परिवार का हिस्सा है।
- इसे यूनेस्को एटलस ऑफ़ द वर्ल्ड्स लैंग्वेजेज इन डेंजर द्वारा वल्नरेबल भाषा के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

## अभ्यास डेजर्ट फ्लैग-10

भारतीय वायु सेना अभ्यास डेजर्ट फ्लैग-10 में भाग ले रही है।

- यह एक प्रमुख बहुराष्ट्रीय वायु युद्ध अभ्यास है। इसका आयोजन संयुक्त अरब अमीरात (UAE) द्वारा किया जा रहा है।

# सुर्ख़ियों में रहे स्थल

## ब्राज़ील (राजधानी: ब्रासीलिया)

ब्राज़ील में 15वीं ब्रिक्स कृषि मंत्रियों की बैठक आयोजित की गई।

**भौगोलिक अवस्थिति:**

- यह दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा और दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा देश है।
- यह अटलांटिक महासागर के किनारे पर स्थित है। चिली और इक्वाडोर को छोड़कर दक्षिण अमेरिका के सभी देशों के साथ इसकी सीमा लगती है।

**भौगोलिक विशेषताएं:**

- भूमध्य रेखा और मकर रेखा दोनों इससे होकर गुजरती है।
- प्रमुख नदी: दुनिया की सबसे बड़ी नदी प्रणाली अमेज़न ब्राजील से होकर बहती है। इस नदी के किनारे दुनिया के प्राकृतिक रूप से विकसित वर्षावन है।
- जलवायु: उत्तर-पूर्वी शुष्क क्षेत्र को छोड़कर, इसके ज्यादातर भाग में आर्द्र उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है।
- खनन: ब्राजील विश्व में नियोबियम का शीर्ष उत्पादक है। इसके अलावा यह लौह अयस्क, मैंगनीज, टैंटालाइट और बॉक्साइट का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।